नगर के वृद्धजनों में सामाजिक, पारिवारिक एवं आर्थिक समायोजन की समस्या (पटना नगर के संदर्भ में)

डॉ० राजेश कुमार

वृद्धावस्था जीवन की शशक्त अवस्था है। इस अवस्था में अनेक शारीरिक और मानसिक परिवर्तन दृष्टिगोचर होते हैं। सामान्य जन–स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधा में सुधार, शिक्षा, आय एवं जीवन स्तर में वृद्धि जैसे सामाजिक एवं प्रौद्योगिकी विकास के द्वारा जनांकिकीय परिवर्तन होता है।

भारत जैसे विकासशील एवं संक्रमण काल से गुजर रहे देश में एक ओर जहाँ सामाजिक सुरक्षा की योजनाओं की कमी है वहीं दूसरी ओर निर्धनता के कारणवृद्धावस्था के लिए धनसंचय की संभावना समाप्त हो जाती है। इसके अतिरिक्त संयुक्त परिवार के रूप में विद्यमान परम्परागत सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था भी एकाकी परिवारों से प्रभावित हो रही है जहाँ वृद्धों के लिए कोई स्थान नहीं होता। परिवार के स्वरूप और कार्यों में परिवर्तन के साथ सामाजिक मूल्यों एवं प्रतिमानों में परिवर्तन वृद्धों में कुंठा के साथ सामाजिक पारिवारिक समायोजन की समस्या उत्पन्न कर रहे हैं। वे सामाजिक जीवन से अलगाव का अनुभव करने के साथ सामाजिक सहभागिता, प्रतिष्ठा एवं आत्मसम्मान की कमी का भी अनुभव कर रहे हैं।